Rajasthani Folk Music and Kalbelia Dance Performance organized by SPICMACAY @ SBPS

Folk music and dance express the dreams, prayers and hopes of the common people. The students of Sarala Birla Public School, Ranchi witnessed the Rajasthani tradition and culture through folk music and dance organized by the Society for the Promotion of Indian Classical Music and Culture Amongst Youth (SPICMACAY) on 16th December 2022. The Rajasthani folk songs and Kalbelia Dance also known as 'Sapera Dance' (Snake Charmer Dance) was performed by Bhungarkhan Manganiyar and Troupe which mesmerized the audience with their wonderful musical renditions. The students gained an insight into the history behind this form of dance and its importance among the people of Kalbelia tribe. The students enjoyed the performance and were given information about musical instruments, folk songs and dance.

School Head personnel and Admin Dr. Pradip Varma appreciated the efforts made by SPICMACAY for promoting Indian culture and heritage among students.

Principal Mrs. Paramjit Kaur said that such events connect the children to their roots and bring them closer to their culture and tradition.

सरला बिरला पब्लिक स्कूल में 'स्पिकमैके' द्वारा राजस्थानी लोक गीत और कालबेलिया नृत्य का आयोजन

सरला बिरला पब्लिक स्कूल, रांची के छात्रों ने विद्यालय के प्रेक्षागृह में राजस्थानी गीत–संगीत एवं नृत्य का आनंद लिया और वहां की समृद्ध कला और संस्कृति से परिचित हुए। यह कार्यक्रम 'स्पिकमैके' संस्था द्वारा 16 दिसंबर 2022 को प्रस्तुत किया गया। संस्था का उद्देश्य युवाओं के मध्य शास्त्रीय संगीत और नृत्य का प्रचार–प्रसार करना है। राजस्थानी लोकगीत और कालबेलिया नृत्य (सपेरा नृत्य) का शानदार प्रदर्शन भुंगर खान मैगनियर और उनकी टीम ने किया। उन्होंने उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। छात्रों ने कालबेलिया जनजाति के लोकप्रिय नृत्य के इतिहास को जाना और उनके लिए इस नृत्य के महत्व से परिचित हुए। छात्रों को नृत्य और गीत के अतिरिक्त वाद्य यंत्रों की भी जानकारी मिली।

विद्यालय के कार्मिक एवं प्रशासनिक प्रमुख डॉ० प्रदीप वर्मा ने स्पिकमैके द्वारा छात्रों को संस्कृति और कला से जोड़ने के अभिनव प्रयास की सराहना की।

प्राचार्या श्रीमती परमजीत कौर ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन बच्चों को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं, जिससे उन्हें अपनी समृद्ध परंपरा और संस्कृति को पहचानने में मदद मिलती है।

SARALA BIRLA PUBLIC SCHOOL
Birla Knowledge City, Mahilong, Ranchi
in association with
SPIC MACAY